दिल्ली बोलेगी तो देश बोलेगा

दिल्ली हमेशा से आतंकवादी संगठनों का पसंदीदा निशाना रही है क्योंकि यहां इस तरह की घटनाएं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरती हैं। ज्यादातर हिंसक घटनाएं विदेशी तत्वों की भागीदारी के कारण घटती हैं। हालांकि, स्थानीय अपराधी तत्वों की भागीदारी के बिना ये कभी भी संभव नहीं हैं। स्थानीय अपराधियों की भागीदारी पैसों के आकर्षण या फिर सरकार के खिलाफ अतिवाद के कारण हो सकती है। हिंसा का स्रोत हमेशा आपराधिक मनःस्थिति होता है। कई बार यह निर्भया जैसी घटनाओं से भी सामने आता है। इस तरह के तत्व सामाजिक वायरस हैं और इनकी

संख्या बहुत कम है। इन्हें हाशिए पर या अलग-थलग कर दिए जाने की आवश्यकता है। संविधान ने हमें यह जिम्मेदारी दी है कि हम देश की एकता, शांति और अखंडता बनाए रखें। आइए, हम यह सुनिश्चित करें कि हमारे घर ऐसे आपराधिक मानसिकता वाले लोगों का सुरक्षित ठिकाना न रहे।

दिल्ली को साफ-सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से एक पायलट प्रोग्राम के रूप में कई नागरिक समाज समूहों, अधिवक्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, समाज के भिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले दिल्ली के लोगों से अपील की गई है कि वे अपने घर से एक प्रदर्शन (वादन) में शामिल हों। इसके तहत, 9 जुलाई 2017 को सवेरे ठीक 10 बजे अपने घर पर ड्रम, शंख या कुछ और बजाना है जिससे सिम्फनी तैयार हो, सिर्फ दो मिनट के लिए। यह त्यौहार का रंग ले लेगा और इसे सिम्फनी ऑफ हारमनी - ईक्या तान कहा जा रहा है। इस अभियान के लिए सड़क पर उतरने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि ऐसा करने से दूसरों को परेशानी होगी और शोर से प्रदूषण होगा।

दिल्ली के पुलिस आयुक्त ने इस आंदोलन को अपने समर्थन की पुष्टि की है। हम उम्मीद करते हैं कि एक जागरूक नागरिक के रूप में आप इस आंदोलन**, "दिल्ली बोलेगी तो देश बोलेगा" - से जुड़ना पसंद करेंगे। अगर यह कामयाब रहता है तो कोशिश की जाएगी कि 26 नवंबर 2017 को इसे देश भर में दोहराया जाए।**